National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 30-08-2024, Accepted: 29-09-2024, Published: 14-10-2024
Volume 9, Issue 4, 2024, Page No. 6-10

शिक्षा में भूमंडलीकरण के प्रभाव का अध्ययन

अभिलाषा सिंह
शोधार्थिनी, शिक्षा विभाग, जे0एस0 विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भूमंडलीकरण समाज की सभी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक ताने बाने में विभिन्न प्रकार की जटिल प्रवृतियों को प्रस्तुत करता है। जनसंख्या के कई समूहों की स्वच्छंदता को दूर करते हुए जीवनशैलियों, भाषाओं और संस्कृतियों के मानकीकरण की लहर के कारण, अल्पसंख्यकों की पहचानों तथा अधिकारों की सुरक्षा के लिए आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्रों साथ ही सांस्कृतिक क्षेत्र में प्रतिरोध सामने आ रहा है। इसमें कोई शक नहीं है कि शिक्षा ही भूमंडलीकरण से डउत्पन्न समस्याओं के उत्तर देगी। भूमंडलीकरण ऐसी प्रक्रिया है जो विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में एकरूपता के साथ उन्हें स्वाभलंबी बनाती है।इस प्रक्रिया में कमजोर देश विकसित देशों का अनुसरण करके तथा उनसे सहायता प्राप्त करके अपना संपूर्ण विकास करते हैं। भूमंडलीकरण तथा शिक्षा दोनों ही आपस में सम्बन्धित हैं किसी एक के बिना दूसरे का विकास संभव नहीं है। जहाँ भूमंडलीकरण के क्षेत्र में मार्गदर्शन का कार्य शिक्षा के द्वारा होता है उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भूमंडलीकरण एक अनुभव ग्रहण करता है। मार्ग और पूर्ति का सही अनुमान भूमंडलीकरण से निश्चित हो सकता है। भूमंडलीकरण के अन्तर्गत अध्यापक की भूमिका को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है, एक अच्छा अध्यापक वही है जो परिवर्तन में विश्वास रखे क्योंकि भूमंडलीकरण परिवर्तन संभव होते हैं।

मूल शब्दः भूमंडलीकरण, शिक्षा, एकरूपता, अध्यापक

भूमण्डलीयकरण एक आधुनिक शब्द है जो 21 वीं शताब्दी की विचारधारा का परिणाम है इसमें सभी राष्ट्र भूमि पर समूह बनाकर रहते हैं। यह एक राष्ट्र पर आधारित न होकर पूरे राष्ट्रों को एक सूत्र में बांधता है। आज मनुष्य के विचारों में व्यापकता आई है। व्यापकता के आधार पर विभिन्न राज्यों ने आपसी निर्भरता को अपनाते हुए एकरूपता का परिचय दिया है।

भूमण्डलीयकरणः एक आधुनिक शब्द

भूमण्डलीयकरण शब्द विभिन्न देशों को मजबूती प्रदान करने की प्रक्रिया है। भारत जैसे देश के लिए भूमण्डलीयकरण का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। क्योंकि केवल इसके द्वारा ही वह अपने आप को आत्म निर्भर बनाकर विकासशील से विकसित राष्ट्र की ओर ले जा सकता है। इस नीति को विदेशी निवेश की नीति भी कहा जाता है। अतः भूमण्डलीय करण को संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है–

1. पूरे विश्व का एक बाजार का रूप धारण करना।
2. किसी समस्या घटना तथा विषय का संकुचित न रखकर व्यापक करना।
3. संसार का प्रत्येक राष्ट्र विश्व के अन्य राष्ट्रों के प्रति जागरूकता दिखाए।
4. विश्व के विभिन्न देशों में आत्मनिर्भरता व एकीकरण की भावना का विकसित होना।

अतः यह कहा जा सकता है कि भूमण्डलीयकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में एक रूपता के साथ–साथ उन्हें आत्म निर्भर भी बनाती है। इस प्रक्रिया में कमजोर देश विकसित देशों का अनुसरण करके उनसे सहायता प्राप्त करके अपना सम्पूर्ण विकास करते है। इस प्रक्रिया के द्वारा सभी देशों की अर्थव्यवस्था सकारात्मक रूप से प्रभावित होती है। यह देश की रीढ़ की हड्डी मानी जा सकती है। इस प्रक्रिया के द्वारा सभी राष्ट्र अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं व अन्य क्षेत्रों जैसे– शिक्षा स्वास्थ्य तथा अन्य ऐसी सेवाओं के द्वारा अन्य पिछड़े देशों को विकासशील से विकसित राष्ट्र बनाने के लिए प्रयत्न करते हैं। भूमण्डलीय करण अपने आप में एक विस्तृत तथ्य है जो 21 वीं शताब्दी की प्रत्येक आवश्यकता का पूर्ण करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

भूमण्डलीयकरण की परिभाषाएं

नाईट के अनुसार "भूमण्डलीकरण तकनीकी, व्यापार, ज्ञान, विचारों तथा मूल्यों की सीमा पार तक बढ़ते प्रवाह के साथ सम्बन्ध रखता है।"

लाचनर के अनुसार, "भूमण्डलीकरण से अभिप्राय सामाजिक जीवन का विश्व स्तर पर संगठन, वैश्विक सम्बन्धों का विस्तार तथा विश्व चेतना का विकास करना है।"

भूमण्डलीयकरण के लाभ

भूमण्डलीयकरण के लाभ निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1. भूमण्डलीयकरण के द्वारा विभिन्न राष्ट्रों की व्यापारिक गतिविधियों का संचालन किया जाता है। विभिन्न कम्पनियां अपनी शाखाएं विभिन्न राष्ट्रों में स्थापित करती है। इससे उस राष्ट्र के नागरिकों को रोजगार के अवसर सुलभता से प्राप्त होते हैं।
2. भूमण्डलीयकरण के कारण विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे के निकट आते हैं। इससे व्यापार तथा सांस्कृतिक कार्यों को सांझा किया जाता है तथा आपसी प्रतिस्पर्धा की भावना को बल प्रदान किया है।
3. भूमण्डलीयकरण एक केन्द्र बिंदु है जहां विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे की निर्भरता पर व्यापार को आगे बढ़ाते हैं। इससे सभी राष्ट्रों के बीच की दूरियां नष्ट होती हैं। जिससे राष्ट्र के नागरिक दूसरे देशों में पर्यटक बनकर आते हैं।
4. भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया द्वारा व्यापार ही नहीं बल्कि अनेकों प्रकार के विषय सांझे किए जाते हैं। इसमें विज्ञान और तकनीकी का आदान–प्रदान तथा संस्कृतियों का आदान प्रदान किया जाता है।
5. भूमण्डलीयकरण एक ऐसी स्थिति है जहां लगभग सभी अंतराष्ट्रीय समस्याओं का समाधान करने के प्रयत्न करते हैं। जैसे आतंकवाद की समस्या व पर्यावरण प्रदूषण की समस्या। इसलिए इन समस्याओं का समाधान आपसी मतभेदों को भुलाकर ही किया जा सकता है।
6. यह प्रक्रिया केवल व्यापार तकनीकी या सांस्कृतिक आदान प्रदान तक नहीं बल्कि शिक्षा प्रक्रिया के आदान प्रदान का

हिस्सा भी है। शिक्षा प्रक्रिया के विभिन्न पक्ष जैसे पाठ्यक्रम में शिक्षक भूमण्डलीयकरण के माध्यम से विभिन्न राष्ट्रों की शिक्षा प्रक्रिया के बारे में जान पाते हैं और छात्रों को इनसे अवगत कराते है। इससे छात्रों के दृष्टिकोण को व्यापकता मिलती है।

7. भूमण्डलीयकरण में सभी राष्ट्र एक दूसरे की समस्याओं को सांझा करते हैं। इससे विश्व एक परिवार की तरह बन जाता है। जहा मानवीय मूल्यों का आपसी तालमेल द्वारा विकास होता है।

भूमण्डलीयकरण की हानियां

भूमण्डलीयकरण की हानियां निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1. विभिन्न राष्ट्र जो आपसी सहयोग की प्रक्रिया द्वारा विकास कर रहे थे। इससे उनकी सहयोगिक प्रक्रिया को धक्का लगता है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के विकास से पहले भूमण्डलीयकरण में अपना स्थान सुरक्षित करता है।
2. इस प्रक्रिया से नैतिक मूल्यों मे गिरावट आती है। इस प्रक्रिया द्वारा वस्तुओं का उत्पादन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होता है। इसके फलस्वरूप नागरिक राष्ट्रीय वस्तुओं का उपभोग करने की बजाए देशों की वस्तुओं पर निर्भर करते हैं। अतः इससे नैतिक मूल्यों का ह्रास होता है।
3. भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया में सभी देश भाग लेते हैं। विकसित, विकासशील तथा अविकसित राष्ट्र अपनी गति के अनुसार विकास प्राप्त करते हैं। इससे इन राष्ट्रों की आय भी प्रभावित होती है। विकसित राष्ट्र अपनी आय में वृद्धि करते हैं। परन्तु विकासशील राष्ट्रों की आय में वृद्धि नाममात्र की होती है।
4. भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया से एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र के साथ सभी क्षेत्रों में आदान–प्रदान की स्थिति उत्पन्न करता है। विकासशील राष्ट्र विकसित राष्ट्रों का अनुसरण करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वे राष्ट्र मजबूत शिक्षा प्रक्रिया को अपनाते हैं।
5. भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया द्वारा विकासशील राष्ट्रों के नागरिक विकसित राष्ट्रों के बारे में जान पाते हैं। इस तरह उन्हें आभास हो जाता है कि इन देशों में व्यापार और रोजगार के अवसर ज्यादा मात्रा में हैं। वे अपने राष्ट्र को छोड़कर प्रतिभा पलायन करने की कोशिश करते हैं।

भूमण्डलीयकरण की आवश्यकता तथा महत्व

भूमण्डलीयकरण आज के समय की आवश्यकता है वह प्रत्येक देश की आवश्यकता है कोई भी देश विकसित होते हुए भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। प्रत्येक देश प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से एक दूसरे देश पर निर्भर करता है। इस निर्भरता को भूमण्डलीयकरण का नाम दिया जाता है। इसलिए इस प्रक्रिया की आवश्यकता निम्नलिखित रूप में कही जा सकती हैः–

1. विश्व स्तर पर व्यापार करना

देश विकसित तथा विकासशील होते हुए भी अपने आप में पूर्ण नहीं है। प्रत्येक देश अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए दूसरे देशों पर निर्भर करता है। इसलिए इस निर्भरता को सकारात्मक रूप प्रदान करते हुए भूमण्डलीयकरण का अनुसरण किया गया है। इस प्रक्रिया के द्वारा व्यापार को राष्ट्रीयता से निकालकर अंतर्राष्ट्रीयता के स्तर तक पहुंचाया जाता है। जिसमें प्रतिस्पर्धा व संसाधनों का पूर्ण प्रयोग संभव है इसे खुली अर्थव्यवस्था का नाम भी दिया जा सकता है।

2. विश्व की अनेक समस्याओं के समाधान के लिए

आज विश्व का कोई भी देश आत्म निर्भर नहीं है। सभी देशों का एक दूसरे पर संसाधनों के लिए निर्भर रहना पड़ता है इसी तरह प्रत्येक देश की अनेक समस्याएं होती हैं। जिनकी समाप्ति भूमण्डलीयकरण द्वारा की जा सकती है। क्योंकि समाज व्यक्तियों का समूह है इन समस्याओं के स्वरूप वहां के वातावरण पर निर्भर करते हैं। इन समस्याओं का समाधान करना केवल बातों तक सीमित नहीं है। बेरोजगारी अनपढ़ता व स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याएं व शिक्षा जैसी समस्याओं का समाधान करना इतना आसान कार्य नहीं है इन समस्याओं के समाधान के लिए आर्थिक सहायता की आवश्यकता होती है। इसी तरह भ्रष्टाचार को खत्म करने के लिए लोकतांत्रिक शासन को अपनाना चाहिए।

3. राष्ट्रीय विकास की आवश्यकता

संसार का प्रत्येक देश अपनी सुरक्षा तथा अर्थव्यवस्था के प्रति चिंतित है। इस आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आर्थिक विकास सब प्रकार की समस्याओं का हल है। जब राष्ट्र आर्थिक रूप से मजबूत होगा तो यह अपना विकास अच्छी प्रकार से कर सकता है। अतः इस आधार पर आर्थिक विकास की मजबूती के लिए भूमण्डलीयकरण बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह राष्ट्रीय विकास की सूचक है जब सभी राष्ट्र एक दूसरे की मदद करते हैं इसे राष्ट्रीय विकास होता है।

4. विश्व नागरिकता के लिए

आज हम 21 वीं शताब्दी में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं यह युग आधुनिकता का युग है। आज का मनुष्य अपने संकीर्ण विचारों के साथ नहीं बल्कि व्यापक दृष्टि कोण के साथ जीवन व्यतीत कर रहा है। वर्तमान में आवश्यकता इस बात की है कि एक ऐसा विचार लोगों के मन में डाला जाये कि व्यापक दृष्टिकोण को सदुपयोगी कार्यों में लगा सकें और स्वार्थी न बनकर अपने राष्ट्र के लिए ही नहीं बल्कि पूरे विश्व विकास के बारे में सोच सकें। इसी तरह भारतीय सभ्यता के अनुसार बसुधैव कुटुम्बकम् का सपना साकार हो सकेगा।

भूमण्डलीयकरण और शिक्षा

भूमण्डलीयकरण और शिक्षा आपस में सम्बन्धित है। दोनों पक्ष आपस में जुड़े हुए हैं। एक के बिना दूसरे का विकास नहीं हो सकता है। एक ओर जहां भूमण्डलीयकरण क क्षेत्र में मार्गदर्शन का कार्य शिक्षा के द्वारा संभव होता है। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भूमण्डलीयकरण अनेक अनुभव ग्रहण करता है। मार्ग और पूर्ति का सही अनुमान भूमण्डलीयकरण से निश्चित हो सकता है। किसी देश की आर्थिक स्थिति किन कारणों से बिगड़ती है। कौन–कौन से क्षेत्र में एक अर्थव्यवस्था पिछड़ी हुई है। आर्थिक दृष्टि से देश की स्थिति कैसी है इस प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में इन समस्याओं का अध्ययन किया जाता है। इन समस्याओं का समाधान शैक्षिक क्षेत्र में प्रयोग द्वारा ही संभव है। शिक्षा ज्ञान का मुख्य साधन है। भूमण्डलीयकरण में शिक्षा की अति आवश्यकता है। जो निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर जानी जा सकती हैः–

भूमण्डलीयकरण व शिक्षा के उद्देश्य

भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया में शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित प्रकार से हैः–

1. दूरदर्शिता की दृष्टि से

भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया आधुनिक समय की माँग है। यह वर्तमान समय के अनुसार सभी के लिए कल्याणकारी स्वरूप है। परन्तु जब इसकी स्थिति खराब हो जाती है तो यह कल्याणकारी नीति को छोड़कर विनाशकारी रूप धारण कर लेती है। अतः भूमण्डलीयकरण के इस से बचने के लिए शिक्षा ही एक माध्यम है यह अध्ययनकर्ता को दूरगामी प्रभाव पहले से ही दिखा देती है। शिक्षा के क्षेत्र में अर्थव्यवस्था को लेकर विषय को सम्मिलित करने का यही उद्देश्य रखा गया है कि जिसमें मांग और पूर्ति के

बीच में संतुलन रखा जाए। प्रत्येक देश मंदी के दिनों में भी स्वयं को सुरक्षित महसूस कर सकता है। इस प्रकार दूरदर्शिता की दृष्टि से भूमण्डलीयकरण में शिक्षा का अध्ययन आवश्यक है। यह शिक्षा को बच्चों के लिए रोचक व आधुनिकता के साथ जोड़कर भूमण्डलीयकरण की आवश्यकता को महसूस करवाता है।

2. माँग और पूर्ति

भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया के दो मुख्य भाग या आधार है किसी भी वस्तु को उत्पादन करके माँग उत्पन्न करना तथा दूसरे उस मांग की पूर्ति करना। इस प्रकार इन दो आधारों के मध्य समन्वय करके भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया को सफल बनाया जा सकता है। तथा उसे नई मंजिल की जा सकती है भूमण्डलीयकरण की इस प्रक्रिया में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा अपने विषय क्षेत्रों में और अर्थव्यवस्था में मांग और पूर्ति का पूर्ण सम्बन्ध बनाती है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया में वस्तु की मांग कैसे पैदा होती है और उसका उत्पादन कैसे किया जाता है व पूर्ति कैसे की जाती है व कितना समान उत्पादित करना चाहिए।

3. विभिन्न संस्कृतियों का आपस में आदान–प्रदान

भूमण्डलीय केवल वस्तुओं के उत्पादन तथा आदान प्रदान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्तियों के विचारों भावनाओं तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोणों को एक दूसरे तक पहुंचाने का एक माध्यम है। किसी देश की शिक्षा का स्तर देखकर यह निर्धारित किया जा सकता है कि वह देश विकास के किस स्तर तक पहुंचा है। शिक्षा के द्वारा विभिन्न देशों की संस्कृतियों विचारों व दृष्टिकोणों को आपस में एक दूसरे के साथ बांटा जाता है इससे एक देश के लोगों के सम्बन्ध दूसरे देश के लोगों के साथ अच्छे होते हैं।

भूमण्डलीयकरण के कारण उत्पन्न चुनौतियां

आज की प्रत्येक वस्तु का उपभोग उसकी गुणवत्ता के आधार पर न होकर उसके नाम के आधार पर होता है। अगर कोई वस्तु उपभोग के योग्य न भी हो और उसका प्रचार– प्रसार जोरों से हुआ हो तो प्रत्येक मनुष्य इसका केवल नाम के आधार पर करता है। भारत जैसे विकासशील राष्ट्र भूमण्डलीयकरण से लाभ उठाने जैसे विकासशील राष्ट्र भूमण्डलीयकरण से लाभ उठाने के बजाए इसे चुनौती के रूप में झेल रहे हैं। इसलिए भूमण्डलीयकरण के कारण भारत के समक्ष निम्नलिखित चुनौतियां आई हैंः–

1. डार्विनवाद का उदय

डार्विन का डार्विन वाद का सिद्धान्त दुनिया भर में प्रसिद्ध है। डार्विन ने अपनी नीति शक्तिशाली की विजय का अनुसरण किया था। इस नीति के अंतर्गत सभी राष्ट्र पूंजी के प्रवाह को बढ़ावा दें। इसमें किसी भी प्रकार की कोई बाधा न हो और प्रत्येक राष्ट्र की मुद्रा के बदले उसे इच्छित वस्तु या खाद्यान्न आदि दिया जाए। डार्विन की इस नीति का भारत जैसे विकासशील देश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है क्योंकि भारतीय मुद्रा कोई वस्तु खरीदने के लिए हमें किसी भी मुद्रा का राष्ट्रीय मूल्य के आधार पर पैसा देना पड़ता है।

2. लघु व कुटीर उद्योगों के लिए खतरा

भारत एक विकासशील राष्ट्र है यह निरन्तर रूप से विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने की कोशिश कर रहा है। यह केवल तभी संभव है जब देश अपनी आत्मनिर्भरता के आधार पर उद्योग स्थापित करे व अपना उत्पादन बढ़ाए तो ऐसा संभव हो सकता है।

3. आम व्यक्ति के लिए सुविधाजनक नहीं

भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया 21 वीं सदी की मांग है आज प्रत्येक राष्ट्र अधिक उन्नति करना चाहता है। वह अपने आप में आत्म–निर्भर बनना चाहता है। इस प्रकार उन्नति करने के लिए राष्ट्र भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया को अपना रहा है। वह दूसरे देशों से आयात की वस्तुएं मंगवाता है और उसे बहुत बड़ी धनराशि उस राष्ट्र को देनी पड़ती है तथा दूसरी ओर राष्ट्र इस धनराशि को उपयोग करने वाली जनता से कर के रूप प्राप्त करता है इस प्रकार जैसे–जैसे आयात–निर्यात का कर बढ़ता रहता है उसी प्रकार राष्ट्र राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं के उत्पादन में कमी या वृद्धि करता रहता है। अतः इस रूप में जहां आम व्यक्ति की समस्याओं में वृद्धि हुई है उसके लिए रोटी, कपड़ा और मकान जैसी मूलभूत आवश्यकताएं प्राप्त करना मुश्किल हो गया है।

4. केवल विकसित राष्ट्रों के लिए उपयुक्त

भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया विकसित देशों के लिए उपयुक्त है। आज के समय में अनेक ऐसी कम्पनियां है जिनकी आय विकासशील देशों की राष्ट्रीय आय से भी ज्यादा है। भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया में कोई राष्ट्र अपने आप को सुरक्षित तभी मान सकता है जब वह स्वयं उत्पादन करे और आत्म निर्भर बनकर अपनी आय में वृद्धि करे।

5. नैतिक और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास

प्रत्येक राष्ट्र विकासशील से विकसित बनने में प्रयासरत है। इसलिए वह अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहता है तथा स्वयं का आर्थिक रूप से मजबूत बनाकर भूमण्डलीयकरण की प्रतिस्पर्धा में अपने आप का खड़ा रखने के लिए तैयार करता है और अपने नागरिकों को सभी प्रकार की सुविधाएं प्रदान कर सकता है।

चुनौतियों का समाधान

इस विश्व की प्रत्येक वस्तु, गतिविधि, व्यक्ति तथा अन्य जीवित वस्तुओं में जहां गुण वहां कुछ अवगुण भी हैं अगर इन अवगुणों पर काबू किया जाए तो प्रत्येक वस्तु का उपयोग लाभकारी होगा। इसी प्रकार भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया का उदाहरण लिया जा सकता है। जिस प्रकार हमने उपयुक्त इस प्रक्रिया की समस्याओं का विवरण प्रस्तुत किया है उसी प्रकार हम इन समस्याओं का समाधान करके इसे भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए उपयुक्त बना सकते हैं। अतः भूमण्डलीयकरण के समक्ष चुनौतियों का समाधान इस प्रकार होना चाहिए।

1. स्वदेशी वस्तुओं का अधिक से अधिक उत्पादन

भारत भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया में विकासशील राष्ट्र है यह प्रतिस्पर्धा में अपना स्तर तभी ऊंचा उठा सकता है जब इसकी नींव आर्थिक रूप से मजबूत होगी। राष्ट्र में कुटीर उद्योगों को फिर से बढ़ावा दिया जाए ताकि व्यक्ति विदेशी वस्तुओं को नकार स्वदेशी वस्तुओं का अधिक से अधिक उपयोग करे।

2. भ्रष्टाचार का खत्म करना

इस विश्वभर में प्रत्येक वस्तु अपने गुणों व दोषों के साथ उत्पन्न होती हैं भारत एक विकासशील देश है। यह विकासशील से विकसित राष्ट्र बनने की ओर निरन्तर रूप से प्रयासरत है। विज्ञान और तकनीकी का उजागर होना इस बात का प्रतीक है कि हम विकसित राष्ट्रों की भांति अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करने के पक्ष में हैं। प्रत्येक राष्ट्र अगर उन्नति करना चाहता है तो पहले उसे आर्थिक रूप से मजबूत होना होगा। आज भारत देश में सबसे अधिक भ्रष्टाचार है जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

3. परम्परावादी और आधुनिकतावादी नीति दोनों का आपस में समन्वय

एक राष्ट्र उन्नति तभी करता है जब उस देश के नागरिकों में राष्ट्रीयता, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, आधुनिकता तथा वैज्ञानिकता के गुण होते हैं।

4. निर्यात बढ़ाकर

निर्यात से अभिप्राय है कि विश्व स्तर पर अपने देश में उत्पादित मान की बिक्री। भूमण्डलीयकरण जैसी गंभीर समस्या को स्वीकार करने के लिए भारत को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने की आवश्यकता है। भूमण्डलीयकरण में सभी देश एक दूसरे के साथ अपनी आवश्यकताओं के आधार पर वस्तुओं के आधार पर वस्तुओं का आयात व निर्यात करते हैं।

5. भारतीय उद्योगों की दशा में सुधार

प्राचीन समय से भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार और कुटीर उद्योग थे कृषि से जो कच्चा माल प्राप्त होता था उसे घरेलू उद्योगों के लिए भेजा जाता था। इस तरह से भारत अपने आप में पूर्ण आत्म निर्भर था। इन उद्योगों से प्राप्त माल का पर्याप्त मात्रा में उपयोग करता था तथा आवश्यकतानुसार दूसरे देशों में भी निर्यात करता था।

6. जनसंख्या पर नियंत्रण

बेरोजगारी और भ्रष्टाचार की तरह बढती हुई जनसंख्या भी भारतीय अर्थव्यवस्था के सामने एक चुनौती है। भारत भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया में इतना पीछे इसलिए है क्योंकि उसके द्वारा उत्पादित माल का ज्यादातर हिस्सा बढ़ती हुई जनसंख्या द्वारा प्रयोग कर लिया जाता है।

7. गरीबी को दूर करके

किसी भी देश की छवि उसके नागरिकों के जीवन स्तर से जानी जा सकती है अगर नागरिक आधुनिक दृष्टिकोण वाले हो तो वह राष्ट्र समृद्ध होगा और अगर नागरिक रूढिवादी विचारों वाले हैं तथा गरीब हैं तो इससे उसे देश की स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया में केवल वस्तुओं काही आदान प्रदान नहीं होता बल्कि संस्कृतियों विचारों व भावनाओं का भी आदान प्रदान होता है।

भूमण्डलीयकरण और पाठ्यक्रम

भूमण्डलीयकरण एक विस्तृत प्रक्रिया पर आधारित है इसे केवल कुछ तथ्यों व सिद्धान्तों पर नहीं समझा जा सकता है। इसे समझने के लिए विस्तृत पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जिसके अंतर्गत भूमण्डलीयकरण के बारे में छात्र पूरी प्रक्रिया को जान सकता है तथा अपनी योग्यतानुसार विकास कर सकता है। वास्तव में भूमण्डलीयकरण में यदि उस छात्र की अर्थव्यवस्था में रूचि है तो वह भूमण्डलीयकरण के बारे में नए तथ्यों की आवश्यक रूप से खोज करेगा। ऐसा तभी संभव होगा जब उसे प्रदान किया जाने वाला पाठ्यक्रम विस्तृत होगा तथा वह निम्नलिखित विशेषताओं पर आधारित होना चाहिएः–

1. पाठ्यक्रम इस प्रकार का हो कि छात्रों वैज्ञानिक, ज्ञानात्मक, बोधात्मक तथा कौशालत्मक विकास करने में सहायक हो। पाठ्यक्रम छात्र की विभिन्न प्रकार की कुशलताओं का विकास करने वाला हो। पाठ्यक्रम में अर्थव्यवस्था विषय के द्वारा छात्रों में भूमण्डलीयकरण के विभिन्न रूपों को जानने की क्षमता उत्पन्न हो।
2. पाठ्यक्रम इस प्रकार का हो कि इसमें समाज की प्रत्येक वस्तु की मांग और पूर्ति का पूरा उल्लेख हो। बदलते समय के साथ–साथ भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया को अपनी नीतियों में क्या और किस समय पर परिवर्तन करना चाहिए यह छात्र पाठ्यक्रम के आधार पर बच्चों को बताया जाना चाहिए।
3. पाठ्यक्रम छात्रों के विकास का माध्यम है पाठ्यक्रम छात्र के व्यवहार में बदलाव का माध्यम है। पाठ्यक्रम छात्रों की आधारभूत आवश्यकता को ध्यान में रखकर बनाया जाए जिससे छात्र अपने विश्व बंधुत्व की भावना का विकास कर सके। भारतीय संस्कृति का मूलभूत वसुधैव कुटुम्बकम् है। अतः पाठ्यक्रमक विश्व बंधुत्व की भावना से भरपूर होना चाहिए इससे भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया के अंतर्गत आने वाले राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों का शोषण नहीं कर पाएगें। बल्कि कोई आपातकालीन स्थिति आने पर उन देशों की सहायता के लिए आगे आएगें ऐसा केवल जागरूकता के द्वारा संभव है।
4. पाठ्यक्रम बच्चे के विचारों का आईना है। इसमें छात्र अपना उसी रूप में विकास करता है जिस रूप में वह करना चाहता है। वह अपनी योग्यता व रूचि के अनुसार प्रत्येक गतिविधि करने के लिए स्वतंत्र है भूमण्डलीयकरण के इस दौर में आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्यक्रम इस प्रकार का हो जिसे पढ़कर छात्र अपनी आंतरिक शक्तियों को विकसित कर सके भारतीय दर्शन मोक्ष की प्राप्ति के पक्ष में है। जबकि पाश्चात्य दर्शन केवल सत्य के रूप तक ही सीमित है। अतः पाठ्यक्रम इस प्रकार का हो जिसका अध्ययन करने पर छात्रों में अनेक गुणों जैसे सांस्कृतिक, मानव मूल्यों तथा विश्व बंधुत्व की भावना का विकास हो सके। छात्र भूमण्डलीयकरण के दौर में दूसरे देशों की साहित्यिक दर्शनों का अध्ययन अवश्य करे परन्तु उसकी चकाचौंध में खोए नहीं क्योंकि भारतीय सभ्यता ही सर्वोपरि है जो मोक्ष प्रदान करने में सहायक है।
5. पाठ्यक्रम की सबसे उत्तमक विशेषता है कि पाठ्यक्रम विभिन्नता पर आधारित होना चाहिए। उसमें बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन होना चाहिए।
6. पाठ्यक्रम आधुनिक समय और परम्परावादी समय में समन्वय बनाने वाला होना चाहिए। वह परम्परावादी नीतियों का निर्धारण करके आधुनिक परिवर्तनों को ग्रहण करने वाला होना चाहिए।
7. पाठ्यक्रम तकनीकी विषयों पर आधारित होना चाहिए तकनीकी विषयों के होने से छात्र का वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित होगा और वह अपनी नीतियों का निर्धारण करेगा तथा भूमण्डलीयकरण की सबसे बड़ी चुनौती उत्पादन की मांग और अधिक उत्पादन का अच्छी प्रकार से समायोजन करना सीखना है।

भूमण्डलीयकरण और शिक्षण विधियां

विश्व में प्रत्येक वस्तु के दो पहलू होते हैं गुण तथा अवगुण, लाभ व हानि। इन्हीं पहलुओं के आधार पर उस वस्तु का निर्धारण किया जाता है कि यह अच्छी वस्तु है या बुरी। अगर उस वस्तु के गुण अधिक होते हैं तो इसके अवगुणों को त्यागकर इसे लाभदायक या गुणी वस्तु कहा जाता है। दूसरी ओर अगर वस्तु के अवगुण अधिक हो तो इसे हानिकारक वस्तु कहा जाता है।

1. इन्टरनेट व कम्प्यूटर का प्रयोग करना

भूमण्डलीयकरण के आज के समय में कम्प्यूटर व इंटरनेट को शिक्षण का आवश्यक भाग माना जाता है आज छात्रों को कम्प्यूटर का ज्ञान होना अति आवश्यक है जो कि भूमण्डलीयकरण की प्रत्येक गतिविधि को प्रत्येक छात्र तक पहुंचाता है प्रत्येक व्यक्ति इस प्रक्रिया को जानकर निवेश करता है वह अपनी आर्थिक गतिविधियों को गतिशीलता प्रदान कर सकता है। शिक्षण विधियों में अध्यापक को इंटरनेट व कम्प्यूटर शिक्षा के प्रयोग का स्थान देना चाहिए। यदि किसी राष्ट्र में

कम्प्यूटर व इंटरनेट चलाने वाले व्यक्तियों की संख्या अधिक है तो वह राष्ट्र उतना ही विकसित माना जाता है जब लोग अपने आप को आधुनिकता के साथ जोड़कर रखते हैं।

2. अनुभवों व क्रियाओं द्वारा सीखना

भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया बहुत ही विस्तृत है इसे केवल अनुभवों व क्रियाओं द्वारा जाना जा सकता है।

3. आत्म–निरीक्षण द्वारा सीखना

प्रत्येक छात्र को आत्म स्वयं का निरीक्षण करना चाहिए। जब कोई छात्र क्रियाओं के आधार पर विधि करता है तो वह उस कार्य को स्वयं कर सकता है भूमण्डलीयकरण में ज्ञान प्राप्त करना इतना आसान नहीं है बल्कि इसे समझने के लिए आत्म निरीक्षण की आवश्यकता होती है।

4. स्व अध्ययन व प्रयोगिक विधि

यह विधि शिक्षण अधिगम क्रिया को प्रभावशाली बनाती है क्योंकि प्रत्येक अधिगम तभी प्रभावशाली हो सकता है जब क्रियाओं को करने के लिए छात्रों को क्रिया में शामिल किया जाए जब छात्र किसी का स्वयं उपयोग करेंगे तो वे उस क्रिया को आसानी से समझ सकते हैं।

भूमण्डलीयकरण और अध्यापक की भूमिका

भूमण्डलीयकरण के अंतर्गत अध्यापक की भूमिका को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। भूमण्डलीयकरण स्वरूप के अनुसार एक अध्यापक में निम्नलिखित योग्यताएं होनी चाहिएः–

1. एक अच्छा अध्यापक वही है जो परिवर्तन में विश्वास रखे क्योंकि भूमण्डलीयकरण में परिवर्तन संभव होते हैं। अर्थात् अध्यापक को परिवर्तनशील विचारों वाला होना चाहिए।
2. एक शिक्षक को उदारवादी दृष्टिकोण वाला होना चाहिए वह कक्षा में छात्रों के प्रति उदारवादी नीति अपनाए वह भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया को भी विकसित करके विकासशील राष्ट्रों के मध्य किसी प्रकार का अन्तर महसूस न करें।
3. एक शिक्षक अपने कर्त्तव्य के प्रति सचेत तभी है जब वह छात्रों को प्रेरित करता है। उसमें संकीर्णता पूर्ण विचारों की नहीं बल्कि नागरिककता तथा उदारवादी विचारों का प्रतिपादन होना चाहिए तभी विश्व एकता की भावना को वह बच्चों में जागृत कर सकेगा।
4. एक शिक्षक को आधुनिक विचारों वाला होना चाहिए वह विभिन्नताओं का समरूप तभी जागृत कर सकता है जब वह अपने छात्रों के लिए एक आदर्श बने। जिसके आवेश में आकर छात्र अपने साथियों के साथ विचारों गुणों व दृष्टिकोणों का आदान प्रदान करे।
5. शिक्षक को सही अर्थों में तभी जागरूक कहा जा सकता है जब वह शिक्षा प्रक्रिया में निरन्तर रूप से ही रहे। अविष्कारों का ज्ञान रखता हो तथा विभिन्न गतिविधियों के प्रचार प्रसार में रूचि रखता हो।
6. एक शिक्षक सही अर्थों में उत्तरदायित्व से पूर्ण होता है अगर वह ज्ञान से पूर्ण है तो वह छात्र के सभी प्रकार के प्रश्नों का हल निकाल सकता है। वह अपने सज्ञान से छात्रों की उत्सुकताओं को समझ सकता है।
7. एक सच्चा शिक्षक वही है जो निरन्तर रूप से अपने ज्ञान में वृद्धि करे तथा जिसकी अधिगम करने की गति धीमी न हो। ऐसे शिक्षक निरन्तर अधिगम द्वारा समाज की विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानता रहता है और भूमण्डलीयकरण का प्रभाव अप्रत्यक्ष रूप से महसूस करता रहता है।
8. जब अध्यापक अपने छात्रों को किसी भी रूप में प्रभावित करता है तो शिक्षक राष्ट्रीय उन्नति में योगदान प्रदान कर सकता है।
9. अध्यापकक अपने चारों ओर की घटनाओं के प्रति सचेत हो वह इस बात को जानने का लगातार प्रयास करे कि हमारे देश के विकसित होने में कौन सी रूकावटें हैं और आर्थिक मंदी किन–किन कारणों से हो सकती है। वह इन समस्याओं को समाप्त करने वाला होना चाहिए।
10. अध्यापक सही अर्थों में छात्रों में अपने वांछित बदलाव और गुण लाए आज प्रत्येक नागरिक को संकुचित विचारों को त्यागकर व्यापक विचारों वाला बनना चाहिए।

भूमण्डलीयकरण और अनुशासन

भूमण्डलीयकरण में शैक्षिक प्रक्रिया के पक्ष में अनुशासन का बहुत महत्व है। जिस प्रकार कक्षा में अध्यापकक व छात्र के मध्य आपसी तालमेल स्थापित हो जाता है। इनमें विचारों व ज्ञान का आदान–प्रदान किया जाता है। छात्र अपनी समस्याएं अध्यापक के सामने रखते हैं। अध्यापक इन समस्याओं का समाधान करने में उनकी मदद करता है। ठीक इसी प्रकार की स्थिति भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया में भी देखी जाती है। इसमें विभिन्न राष्ट्र छात्रों की भांति माने जाते हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रों के बारे में उसकी आर्थिक स्थिति, संस्कृति, परम्पराओं, आधुनिकता शिक्षा स्तर व प्रतिव्यक्ति आय आदि का पूर्ण ज्ञान जानते हैं। वह किसी बात को अच्छी लगने पर उसे अपने देश में लागू भी कर सकते हैं। इसी तरह विकसित राष्ट्र विकासशील राष्ट्रों की आवश्यकता पड़ने पर मदद भी करते हैं।

निष्कर्ष

भूमण्डलीयकरण प्रक्रिया आज के समय की आवश्यकता है। जहां प्रत्येक राष्ट्र अपने आप को आत्मनिर्भर बनाने की होड़ में है। भूमण्डलीयकरण की प्रक्रिया को आज आधुनिक समय में लागू किया जाना चाहिए। इसे भी अन्य अवधारणाओं की तरह निश्चित शिक्षा प्रक्रिया के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित किया जाए। यह प्रक्रिया केवल उत्पादन के साधनों तक ही सीमित न हो बल्कि विचारों, संस्कृतियों तथा शिक्षा का भी आदान–प्रदान करने वाली हो। जिससे विश्व का प्रत्येक नागरिक संकुचित विचारों को त्यागकर विश्व भातृत्व और विश्व नागरिकता में विश्वास करें।

संदर्भ गन्थ सूची

1. गुप्ता, एस., पी. तथा गुप्ता अलका (2010), "भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास, एवं समस्यायें", षरदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
2. गुप्ता, एस., पी. तथा गुप्ता अलका (2008), "भारतीय शिक्षा का सफरनामा'', षरदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।
3. रावत, प्यारे लाल (1972), "भारतीय शिक्षा का इतिहास'', राम प्रसाद एन्ड सन्स आगरा।
4. www.google.com
5. www.wikipedia.com